अनमोल उपहार

एक इतालवी लोककथा

एक पुरानी कहावत है कि 'क्षुद्र चीज़ें भी मूल्यवान हो सकती हैं'. जिन दिनों मसालों का व्यापार होता था, यह कहावत अवश्य ही सच थी. दालचीनी, लौंग और जायफल की खोज में यूरोप के व्यापारी दूर देशों तक जाया करते थे, क्योंकि यह चीज़ें उन देशों में उपलब्ध नहीं थीं और धनी लोग ही इनको खरीद पाते थे.

जब एन्टोनियो अपने नगर जैनोवा से मसाले खरीदने के लिए अपने जहाज़ पर निकला तो संयोग से उसे पता चला कि उसके पास भी एक ऐसी मूल्यवान वस्तु थी जो उन द्वीपों पर दुर्लभ थी. वहाँ का राजा चूहों की समस्या का समाधान खोज रहा था. घटनाचक्र से सिद्ध हुआ कि जो चीज़ एक व्यक्ति के लिए मूल्यहीन होती है वही दूसरे के लिए मूल्यवान हो सकती है.

अनमोल उपहार

एक इतालवी लोककथा

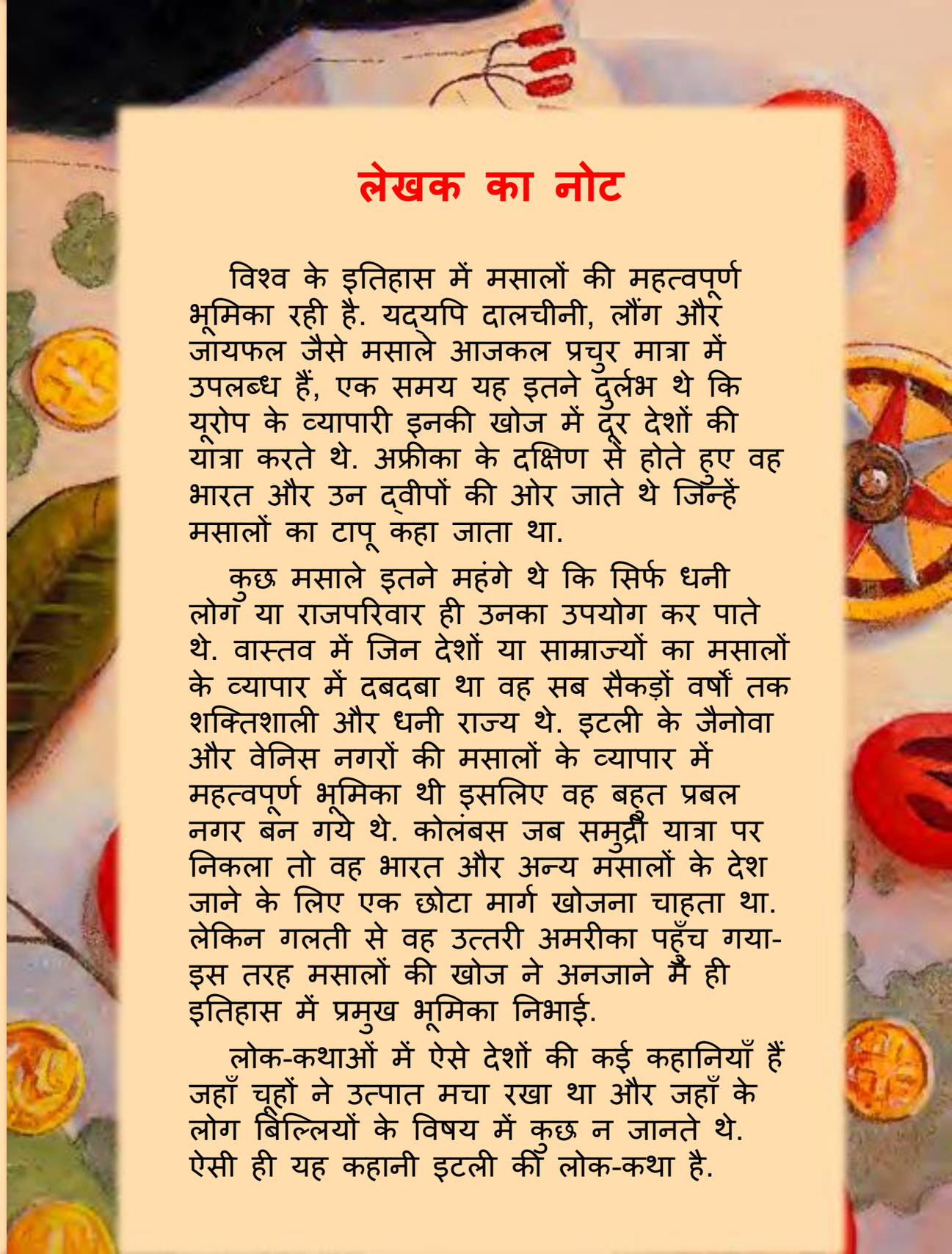

लेखक का नोट

विश्व के इतिहास में मसालों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है. यदयपि दालचीनी, लौंग और जायफल जैसे मसाले आजकल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, एक समय यह इतने दुर्लभ थे कि यूरोप के व्यापारी इनकी खोज में दूर देशों की यात्रा करते थे. अफ्रीका के दक्षिण से होते हुए वह भारत और उन द्वीपों की ओर जाते थे जिन्हें मसालों का टापू कहा जाता था.

कुछ मसाले इतने महंगे थे कि सिर्फ धनी लोग या राजपरिवार ही उनका उपयोग कर पाते थे. वास्तव में जिन देशों या साम्राज्यों का मसालों के व्यापार में दबदबा था वह सब सैकड़ों वर्षों तक शक्तिशाली और धनी राज्य थे. इटली के जैनोवा और वेनिस नगरों की मसालों के व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका थी इसलिए वह बहुत प्रबल नगर बन गये थे. कोलंबस जब समुद्री यात्रा पर निकला तो वह भारत और अन्य मसालों के देश जाने के लिए एक छोटा मार्ग खोजना चाहता था. लेकिन गलती से वह उत्तरी अमरीका पहुँच गया- इस तरह मसालों की खोज ने अनजाने में ही इतिहास में प्रमुख भूमिका निभाई.

लोक-कथाओं में ऐसे देशों की कई कहानियाँ हैं जहाँ चूहों ने उत्पात मचा रखा था और जहाँ के लोग बिल्लियों के विषय में कुछ न जानते थे. ऐसी ही यह कहानी इटली की लोक-कथा है.

बहुत समय पहले
इटली के एक नगर जैनोवा में
एन्टोनियो नाम का एक सौदागर रहता था.
एक दिन एन्टोनियो ने अपना जहाज़
सामान से भर लिया और दूर-दराज़ के
द्वीपों की यात्रा पर चल पड़ा. उसकी
योजना उन मसालों को खरीदने की थी
जिनकी उसके देश में बहुत माँग थी.

वहाँ पहुँच कर वह
एक द्वीप से दूसरे द्वीप गया.
उसने
मखमल देकर दालचीनी,
गुड़ियाँ देकर लौंग,
चमड़े की पेटियाँ देकर
जायफल खरीदा.

एक द्वीप पर वहाँ के राजा ने
उसे भोज पर आमंत्रित किया.
लेकिन जब वह दावत के लिए बैठा तो
एन्टोनियो ने कई सेवकों को लाठियाँ
पकड़े देखा. प्रतीत हो रहा था कि वह सब
किसी को मारने के लिए तैयार खड़े थे.

“कितनी आश्चर्य की बात है!”
वह सोचने लगा.
“यह पहरेदार
क्या कर रहे हैं?”

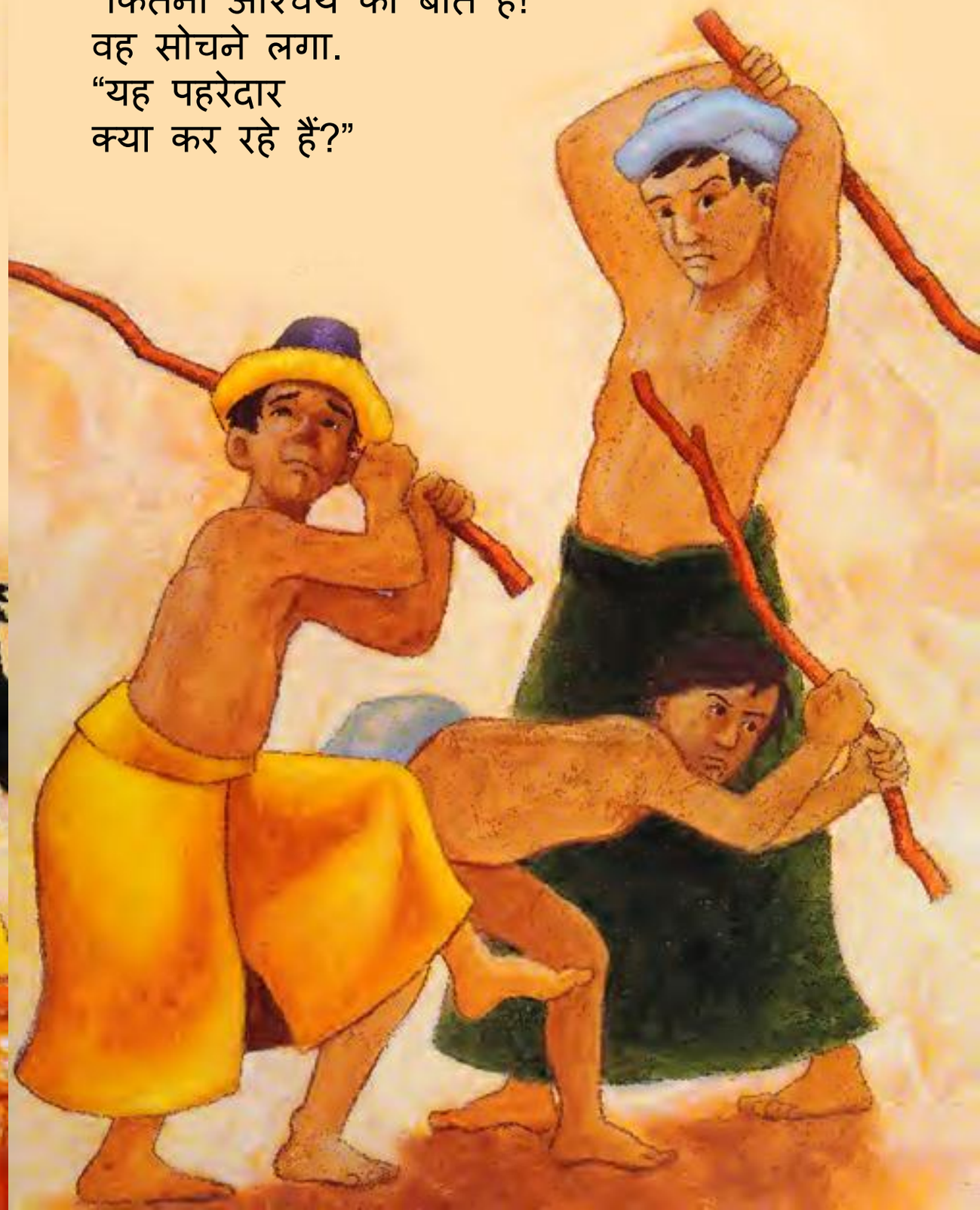

जब भोजन परोसा गया तो एन्टोनियो को
अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया.
व्यंजनों की सुगंध पाकर दर्जनों चूहे
अचानक वहाँ पर आ गये.
पहरेदार चूहों के पीछे
यहाँ-वहाँ भागने लगे और
लाठियों से मार कर
उन्हें हटाने लगे.

एन्टोनियो स्तब्ध रह गया. “महाराज,” उसने कहा, “क्या इस द्वीप पर बिल्लियाँ नहीं हैं?”

राजा चकित हो गया. “बिल्लियाँ? उनके बारे में हम ने कभी सुना नहीं. वह क्या होती हैं?”

“बिल्लियाँ मुलायम बालों वाली छोटी पशु होती हैं और शिकार करना उन्हें अच्छा लगता है,” एन्टोनियो ने बताया.

“चूहों का पीछा करना उन्हें सबसे अधिक पसंद है. इस द्वीप से वह आनन-फानन में चूहों का सफ़ाया कर देंगी!”

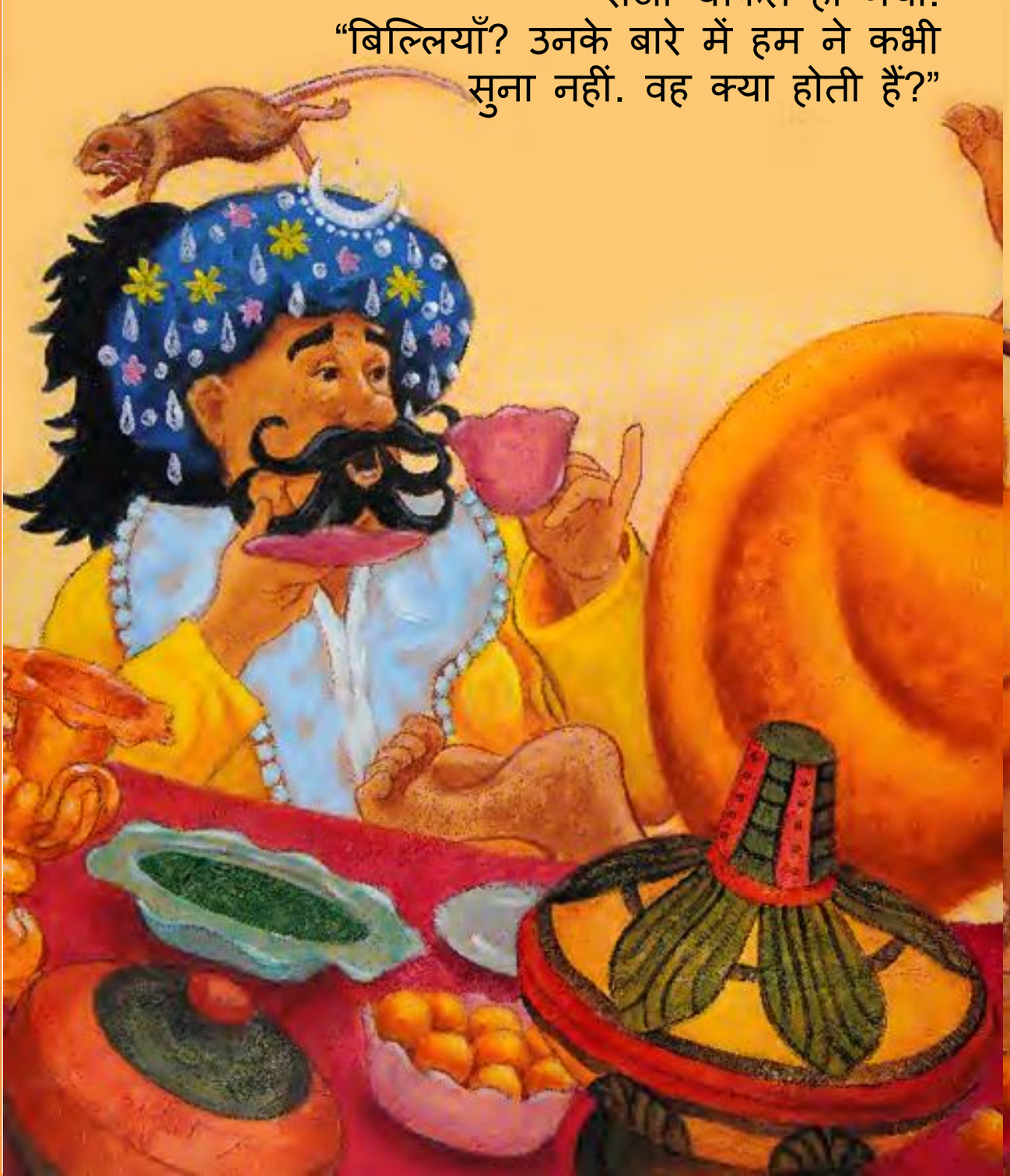

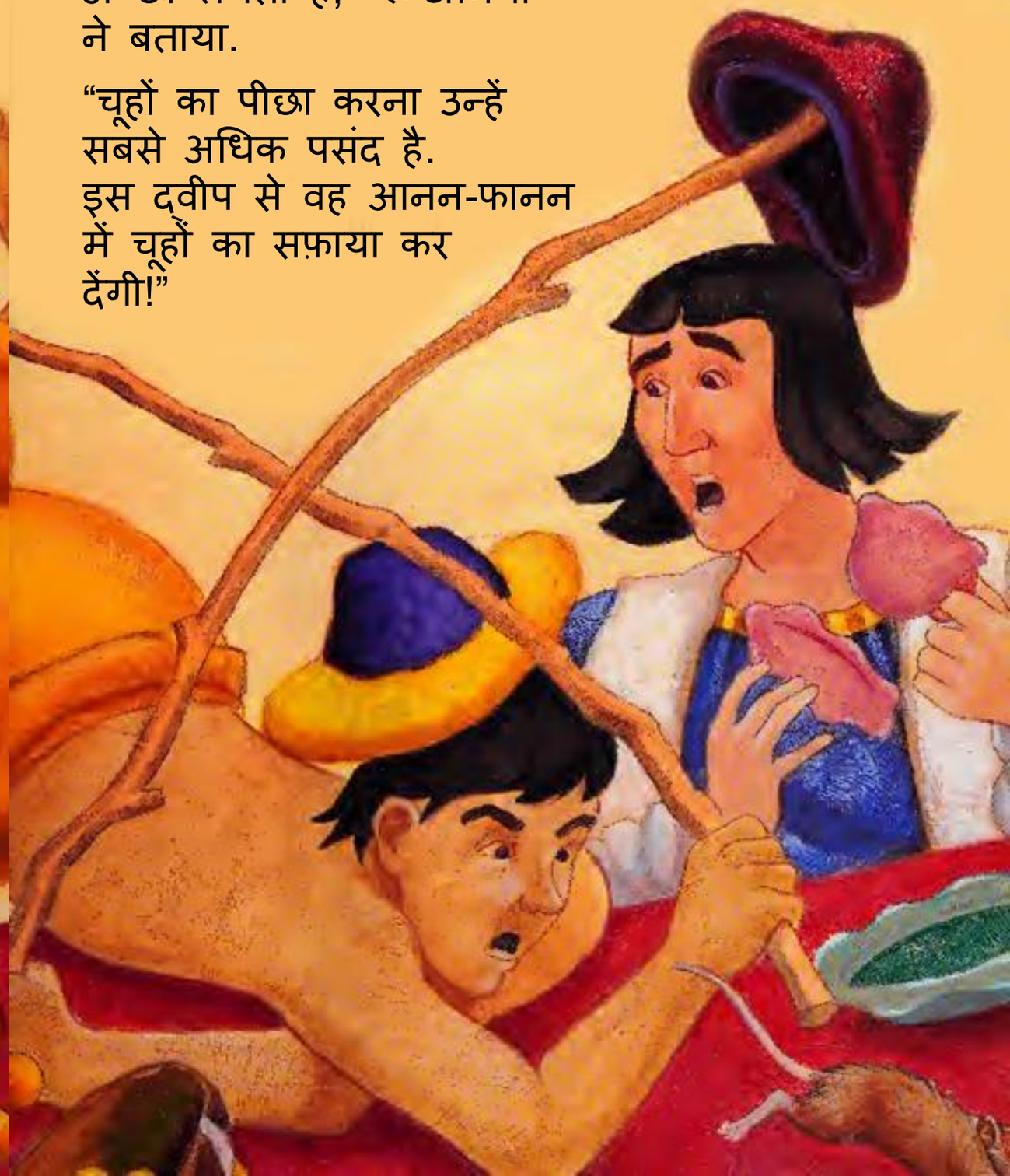

“सच में?” राजा ने पूछा.

“हमें कुछ बिल्लियाँ कहाँ मिलेंगी?

अगर हमारे लिए तुम कुछ बिल्लियाँ ला दो तो हम तुम्हें मुँह माँगा मूल्य देंगे! बस, बताओ कि मूल्य क्या है.”

“बिल्लियों का मूल्य चुकाने की आवश्यकता नहीं है,” एन्टोनियो ने कहा. “हमारे जहाज़ पर बहुत बिल्लियाँ हैं. आपको कुछ बिल्लियाँ देकर मुझे प्रसन्नता होगी.”

एन्टोनियो चल दिया और शीघ्र ही एक धारीदार बिल्ली और एक बड़ा बिल्ला लेकर लौट आया. जब उसने दोनों को खुला छोड़ दिया तो चूहे डर कर भोजन-कक्ष से भाग गए और बिल्लियाँ उनका पीछा करती रहीं.

“कितनी आश्चर्यजनक पशु हैं यह!”
राजा खुशी से चिल्लाया.

“धन्यवाद, मेरे मित्र, अब बदले में मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ.”

राजा ने एन्टोनियो को मूल्यवान रत्नों और चमकदार हीरों से भरा एक संदूक दिया.

“महाराज, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है,” एन्टोनियो ने विरोध करते हुए कहा. लेकिन राजा उसकी बात मानने को तैयार न था. “एन्टोनियो, तुम ने हमें बहुमूल्य उपहार दिया है. और इस द्वीप पर हमारे पास इतने मूल्यवान रत्न और जवाहिर हैं कि हमें समझ नहीं आता कि उनका क्या करें.

इन उत्तम पशुओं के बदले में हमारी यह भेंट तुम कृपया स्वीकार कर लो.”

एन्टोनियो अपने नगर जैनोवा लौट आया और अपनी यात्रा की कहानी सबको सुनाई.

उसके सौभाग्य पर सब प्रसन्न थे, सिवाय ल्युइजी के जो नगर का सबसे धनी सौदागर था. जब उसने यह बात सुनी तो उसे ईर्षा होने लगी. “दो निकम्मी बिल्लियों के बदले में उस द्वीप के राजा ने इतने अनूठे रत्न और जवाहिर एन्टोनियो को दे दिये,” ल्युइजी ने अपने आप से कहा. “अरे, ऐसा उपहार तो राजा को कोई गरीब किसान भी दे सकता था. कल्पना करो, ऐसी वस्तु जो सत्य में मूल्यवान हो अगर मैं राजा को भेंट में दूँ तो न जाने वह कैसा उपहार मुझे देगा.”

और ल्युइजी ने अपने जहाज़ में उत्कृष्ट मूर्तियाँ, उत्तम चित्र, और सबसे बढ़िया वस्त्र भर लिए. जब वह द्वीप पर पहुँचा तो उसने झूठ बोला. उसने राजा के पास संदेश भिजवाया कि वह एन्टोनियो का मित्र था. यह बात जान कर राजा ने ल्युइजी को रात्रि-भोज के लिए आमंत्रित किया.

जब ल्युइजी के लाये बहुमूल्य उपहार राजा ने देखे तो वह आश्चर्यचकित हो गया.

“तुम्हारी उदारता से मैं बहुत प्रभावित हूँ, ल्युइजी,” राजा ने कहा. “मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं अपना आभार कैसे व्यक्त करूँ.”

राजा ने अपने मंत्रियों से बात की.
कुछ समय बाद ल्युइजी को
शाही दरबार में बुलाया गया.

“तुम्हारे उपहार के विषय में हम ने
बहुत चर्चा की है, ल्युइजी.
यह बताने में मुझे प्रसन्नता
हो रही है कि हम ने एक
उत्तम उपहार चुन लिया है.
वह सच में बहुमूल्य है.”

इतना कह कर राजा ने सेवकों को
आदेश दिया कि उपहार ले आयें.

ल्युइजी बड़ी कठनाई से अपनी उत्तेजना को दबा पाया. उसे विश्वास था कि जितने हीरे-जवाहरात एन्टोनियो को मिले थे उनसे बीस गुणा अधिक उसे अवश्य मिलेंगे.

मखमल के कपड़े से ढका हुआ रेशम का एक गद्दा राजा ने ल्युइजी को भेंट किया.

जब ल्युइजी ने मखमल का कपड़ा उठाया तो वह अवाक हो गया.
गद्दे पर एक रोयेंदार गेंद था.
जब गेंद हिला तो ल्युइजी को समझ
आया कि वह था.....

.....बिल्ली का बच्चा.

“तुम्हारे मित्र ने जो अनमोल
बिल्लियाँ हमें दी थीं
उन्होंने अभी-अभी बच्चे दिये हैं.
क्योंकि तुम ने हमें
इतने शानदार उपहार दिये हैं,
इसलिए अपनी सबसे
मूल्यवान वस्तु हम तुम्हें उपहार
स्वरूप देना चाहते हैं.”

ल्युइजी ने जब राजा के प्रफुल्लित चेहरे को देखा तो
उसे अहसास हुआ कि राजा के लिए बिल्ली का
छोटा बच्चा उन सारी बहुमूल्य वस्तुओं से
अधिक मूल्यवान था जो उसने
राजा को उपहार में दी थीं.

वह समझ गया कि मुस्करा कर, प्रसन्नता से
राजा का उपहार स्वीकार करने का
नाटक करना ही उचित होगा.
और उसने वैसा ही किया.

और यद्यपि ल्युइजी धनवान बन कर
घर न लौटा था, परंतु वह अधिक
बुद्धिमान अवश्य हो गया था.

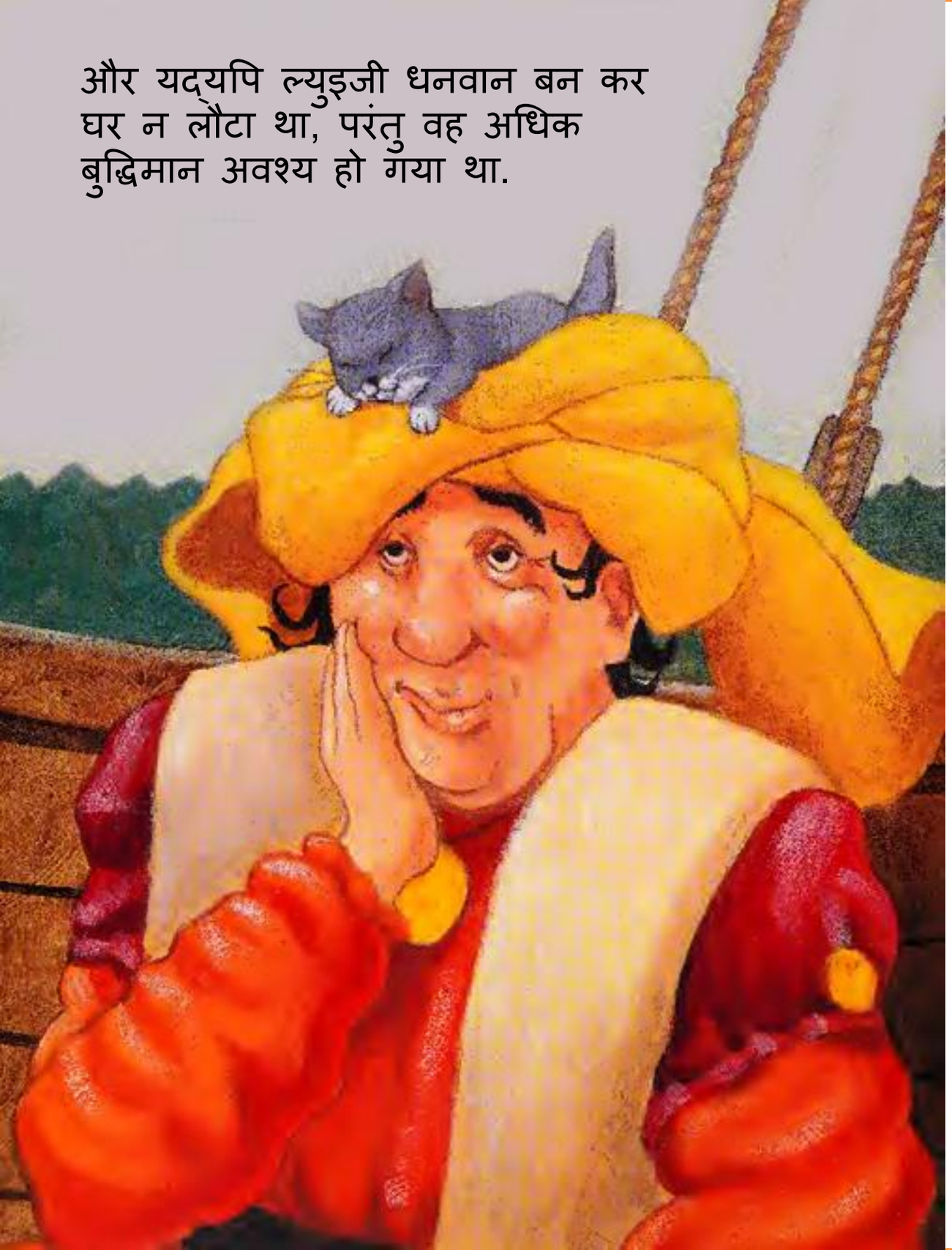

समाप्त